

रविवार 23 फरवरी, 2020

विषय — मन

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 94 : 10

"जो जाति जाति को ताड़ना देता, और मनुष्य को ज्ञान सिखाता है"

उत्तरदायी अध्ययन:

निर्गमन 20 : 2-4

नीतिवचन 2 : 6-8

- 2 कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है॥
- 3 तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना॥
- 4 तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी कि प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, वा पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल में है।
- 6 क्योंकि बुद्धि यहोवा ही देता है; ज्ञान और समझ की बातें उसी के मुंह से निकलती हैं।
- 7 वह सीधे लोगों के लिये खरी बुद्धि रख छोड़ता है; जो खराई से चलते हैं, उनके लिये वह ढाल ठहरता है।
- 8 वह न्याय के पथों की देख भाल करता, और अपने भक्तों के मार्ग की रक्षा करता है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. मलाकी 4 : 2 (पर्यत)-4

- 2 ... लिये जो मेरे नाम का भय मानते हो, धर्म का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों के द्वारा तुम चंगे हो जाओगे; और तुम निकल कर पाले हुए बछड़ों की नाई कूदोगे और फांदोगे।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 3 तब तुम दुष्टों को लताड़ डालोगे, अर्थात् मेरे उस ठहराए हुए दिन में वे तुम्हारे पांवों के नीचे की राख बन जाएंगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है॥
- 4 मेरे दास मूसा की व्यवस्था अर्थात् जो जो विधि और नियम मैं ने सारे इस्राएलियों के लिये उसको होरेब में दिए थे, उन को स्मरण रखो॥

2. | शमूएल 30 : 1-6, 8-10 (से:), 11, 15 (से?), 16 (से 5th), 17 (से:), 18, 19

- 1 तीसरे दिन जब दाऊद अपने जनों समेत सिकलग पहुंचा, तब उन्होंने क्या देखा, कि अमालेकियों ने दक्खिन देश और सिकलग पर चढ़ाई की। और सिकलग को मार के फूंक दिया,
- 2 और उस में की स्त्री आदि छोटे बड़े जितने थे, सब को बन्धुआई में ले गए; उन्होंने किसी को मार तो नहीं डाला, परन्तु सभों को ले कर अपना मार्ग लिया।
- 3 इसलिये जब दाऊद अपने जनों समेत उस नगर में पहुंचा, तब नगर तो जला पड़ा था, और स्त्रियां और बेटे-बेटियां बन्धुआई में चली गई थीं।
- 4 तब दाऊद और वे लोग जो उसके साथ थे चिल्लाकर इतना रोए, कि फिर उन में रोने की शक्ति न रही।
- 5 और दाऊद की दो स्त्रियां, यिज्जेली अहीनोअम, और कर्मैली नाबाल की स्त्री अबीगैल, बन्धुआई में गई थीं।
- 6 और दाऊद बड़े संकट में पड़ा; क्योंकि लोग अपने बेटे-बेटियों के कारण बहुत शोकित हो कर उस पर पत्थरवाह करने की चर्चा कर रहे थे। परन्तु दाऊद ने अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण करके हियाव बान्धा॥
- 8 और दाऊद ने यहोवा से पूछा, क्या मैं इस दल का पीछा करूं? क्या उसको जा पकड़ूंगा? उसने उस से कहा, पीछा कर; क्योंकि तू निश्चय उसको पकड़ेगा, और निसन्देह सब कुछ छुड़ा जाएगा;
- 9 तब दाऊद अपने छः सौ साथी जनों को ले कर बसोर नाम नाले तक पहुंचा; वहां कुछ लोग छोड़े जा कर रह गए।
- 10 दाऊद तो चार सौ पुरूषों समेत पीछा किए चला गया।
- 11 उन को एक मिस्री पुरूष मैदान में मिला, उन्होंने उसे दाऊद के पास ले जा कर रोटी दी; और उसने उसे खाया, तब उसे पानी पिलाया,
- 15 दाऊद ने उस से पूछा, क्या तू मुझे उस दल के पास पहुंचा देगा?
- 16 जब उसने उसे पहुंचाया, तब देखने में आया कि वे सब भूमि पर छिटके हुए खाते पीते।
- 17 इसलिये दाऊद उन्हें रात के पहिले पहर से ले कर दूसरे दिन की सांझ तक मारता रहा।
- 18 और जो कुछ अमालेकी ले गए थे वह सब दाऊद ने छुड़ाया; और दाऊद ने अपनी दोनों स्त्रियों को भी छुड़ा लिया।
- 19 वरन उनके क्या छोटे, क्या बड़े, क्या बेटे, क्या बेटियां, क्या लूट का माल, सब कुछ जो अमालेकी ले गए थे, उस में से कोई वस्तु न रही जो उन को न मिली हो; क्योंकि दाऊद सब का सब लौटा लाया।

3. लूका 4 : 14 (सं:), 40

- 14 फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा।
40 सूरज डूबते समय जिन जिन के यहां लोग नाना प्रकार की बीमारियों में पड़े हुए थे, वे सब उन्हें उसके पास ले आए, और उस ने एक एक पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया।

4. लूका 12 : 22-24, 27-31

- 22 फिर उस ने अपने चेलों से कहा; इसलिये मैं तुम से कहता हूं, अपने प्राण की चिन्ता न करो, कि हम क्या खाएंगे; न अपने शरीर की कि क्या पहिनेंगे।
23 क्योंकि भोजन से प्राण, और वस्त्र से शरीर बढ़कर है।
24 कौवों पर ध्यान दो; वे न बोते हैं, न काटते; न उन के भण्डार और न खत्ता होता है; तौभी परमेश्वर उन्हें पालता है; तुम्हारा मूल्य पक्षियों से कहीं अधिक है।
27 सोसनों के पेड़ों पर ध्यान करो कि वे कैसे बढ़ते हैं; वे न परिश्रम करते, न काटते हैं; तौभी मैं तुम से कहता हूं, कि सुलैमान भी, अपने सारे विभव में, उन में से किसी एक के समान वस्त्र पहिने हुए न था।
28 इसलिये यदि परमेश्वर मैदान की घास को जो आज है, और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा पहिनाता है; तो हे अल्प विश्वासियों, वह तुम्हें क्यों न पहिनाएगा?
29 और तुम इस बात की खोज में न रहो, कि क्या खाएंगे और क्या पीएंगे, और न सन्देह करो।
30 क्योंकि संसार की जातियां इन सब वस्तुओं की खोज में रहती हैं; और तुम्हारा पिता जानता है, कि तुम्हें इन वस्तुओं की आवश्यकता है।
31 परन्तु उसके राज्य की खोज में रहो, तो ये वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।

5. यूहन्ना 5 : 19, 20, 30

- 19 इस पर यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।
20 क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखता है और जो जो काम वह आप करता है, वह सब उसे दिखाता है; और वह इन से भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम अचम्भा करो।
30 मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूं, वैसा न्याय करता हूं, और मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूं।

6. यूहन्ना 7 : 14-16

- 14 और जब पर्व के आधे दिन बीत गए; तो यीशु मन्दिर में जाकर उपदेश करने लगा।

- 15 तब यहूदियों ने अचम्भा करके कहा, कि इसे बिन पढ़े विद्या कैसे आ गई?
16 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मेरा उपदेश मेरा नहीं, परन्तु मेरे भेजने वाले का है।

7. याकूब 3 : 17 (ज्ञान)

- 17 ...जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहिले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया, और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपट रहित होता है।

8. नीतिवचन 3 : 1, 5, 6

- 1 हेमेरे पुत्र, मेरी शिक्षा को न भूलना; अपने हृदय में मेरी आज्ञाओं को रखे रहना;
5 तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।
6 उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 587 : 5-8

परमेश्वर। मैं जो महान हूँ; सर्व-ज्ञान, सर्व-दर्शन, सर्व-कार्य, सर्व-ज्ञान, सर्व-प्रिय और शाश्वत; सिद्धांत; मन; अन्तः मन; आत्मा; जिदगी; सत्य; प्रेम; सभी पदार्थ; बुद्धि।

2. 591 : 16-20

मन। केवल मैं, या हम; एकमात्र आत्मा, जीवन, दिव्य सिद्धांत, पदार्थ, जीवन, सत्य, प्रेम; एक ईश्वर; वह नहीं जो मनुष्य में है, लेकिन ईश्वरीय सिद्धांत या ईश्वर, किसका मनुष्य पूर्ण और परिपूर्ण अभिव्यक्ति है; देवता, जो रेखांकित करते हैं, लेकिन रेखांकित नहीं किए जाते हैं।

3. 379 : 6-8

संसार का वास्तविक क्षेत्राधिकार मन में है, प्रत्येक प्रभाव को नियंत्रित करता है और सभी कार्य को दिव्य मन में निहित माना जाता है।

4. 488 : 23-27

अकेले मन के पास सभी संकायों, धारणा और समझ है। इसलिए मानसिक अंतर्मुखता संगठन और विघटन की दया पर नहीं हैं, — अन्यथा कीड़े मनुष्य को नष्ट कर सकते थे।

5. 453 : 29-31

एक क्रिश्चियन वैज्ञानिक की दवा मन है, वह दिव्य सत्य जो मनुष्य को स्वतंत्र बनाता है। एक क्रिश्चियन वैज्ञानिक कभी भी सामग्री स्वच्छता की सिफारिश नहीं करता है, कभी भी हेरफेर नहीं करता है।

6. 483 : 6 (मन कर सकता है)-12

मन चंगा कर सकता है, और यह मन मानवीय होना चाहिए, दिव्य नहीं। मन अन्य सभी शक्ति को पार कर जाता है, और अंततः चिकित्सा में अन्य सभी साधनों को उलट देगा। विज्ञान द्वारा चंगा करने के लिए, आपको विज्ञान की नैतिक और आध्यात्मिक मांगों से अनभिज्ञ नहीं होना चाहिए और न ही उनकी अवज्ञा करनी चाहिए। नैतिक अज्ञानता या पाप आपके प्रदर्शन को प्रभावित करता है, और ईसाई विज्ञान में मानक के लिए अपने दृष्टिकोण में बाधा।

7. 13 : 15 (परमेश्वर)-19

इससे पहले कि हम उसे या हमारे साथी-प्राणियों को इसके बारे में बताएं, ईश्वर हमारी आवश्यकता को जानता है। यदि हम ईमानदारी से और चुपचाप और विनम्रता से इच्छा को संजोते हैं, तो भगवान इसे आशीर्वाद देंगे, और हम शब्दों की एक धार के साथ अपनी वास्तविक इच्छाओं को कम करने के जोखिम को कम करेंगे।

8. 7 : 23-26

ईश्वर मनुष्य से प्रभावित नहीं है। "दिव्य कान" श्रवण तंत्रिका नहीं है। यह सर्व-श्रवण और सर्व-ज्ञान मन है, जिनके लिए मनुष्य की प्रत्येक आवश्यकता को हमेशा जाना जाता है और जिनके द्वारा इसकी आपूर्ति की जाएगी।

9. 15 : 7-13

गुप्त में पिता भौतिक इंद्रियों के लिए अनदेखा है, लेकिन वह सभी चीजों को जानता है और इरादों के अनुसार पुरस्कार लेता है, भाषण के अनुसार नहीं। प्रार्थना के दिल में प्रवेश करने के लिए, गलत इंद्रियों का दरवाजा बंद होना चाहिए। होंठों को मूक और भौतिकवाद चुप होना चाहिए, ताकि मनुष्य में आत्मा, दिव्य सिद्धांत और प्रेम के साथ दर्शक हो, जो सभी त्रुटि को नष्ट कर दे।

10. 84 : 11-23

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

भूत, वर्तमान और भविष्य को जानना, वर्तमान, दिव्य मन का विचार है, और इस विचार का जो इस मन के साथ तालमेल है,

साइंस के साथ परिचित होना हमें बड़े पैमाने पर दिव्य मन के साथ कम्यून को सक्षम बनाता है, सर्वकल्याण की चिंता करने वाली घटनाओं का पूर्वाभास और पूर्वाभास, दैवीय रूप से प्रेरित करने के लिए, — हाँ, भ्रूणहीन मन की सीमा तक पहुँचने के लिए।

यह समझना कि माइंड असीम है, कॉर्पोरलिटी से घिरा नहीं है, ध्वनि या दृष्टि के लिए कान और आंख पर निर्भर नहीं है और न ही यह मांसपेशियों और हड्डियों पर निर्भर करता है, माइंड-साइंस की ओर एक कदम है जिसके द्वारा हम मनुष्य के स्वभाव और अस्तित्व की व्याख्या करते हैं

11. 254 : 10-12

जब हम धैर्यपूर्वक ईश्वर की प्रतीक्षा करते हैं और सत्य की तलाश करते हैं, तो वह हमारे मार्ग का निर्देशन करता है।

12. 170 : 14-21

सत्य की माँगें आध्यात्मिक हैं, और मन के द्वारा शरीर तक पहुँचती हैं। मनुष्य की जरूरतों का सबसे अच्छा दुभाषिया ने कहा: "कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे, और क्या पीएंगे"

यदि ऐसे भौतिक कानून हैं जो बीमारी को रोकते हैं, तो इसके कारण क्या हैं? ईश्वरीय कानून नहीं, क्योंकि यीशु ने बीमारों को चंगा किया और त्रुटि को मिटा दिया, हमेशा विरोध में, कभी भी आज्ञाकारिता में, भौतिकी को नहीं।

13. 171 : 12-16

मनुष्य सहित ब्रह्मांड पर मन का नियंत्रण अब एक खुला प्रश्न नहीं है, बल्कि विज्ञान है। यीशु ने बीमारी और पाप को ठीक करने और मृत्यु की नींव को नष्ट करके दिव्य सिद्धांत और अमर मन की शक्ति का वर्णन किया।

14. 371 : 26-32

विज्ञान और ईसाई धर्म के माध्यम से मानव जाति में सुधार होगा। दौड़ को बढ़ाने के लिए आवश्यकता इस तथ्य के लिए पिता है कि माइंड यह कर सकता है; क्योंकि मन अशुद्धता के बजाय पवित्रता प्रदान कर सकता है, कमजोरी के बजाय ताकत और बीमारी के बजाय स्वास्थ्य। सत्य संपूर्ण व्यवस्था में परिवर्तनकारी है, और इसके "हर तिनका को पूरा" कर सकते हैं।

15. 383 : 5-11

कोई कहता है: "मैं अपने शरीर की अच्छी देखभाल करता हूँ।" ऐसा करने के लिए, शरीर पर दिव्य मन का शुद्ध और उत्कृष्ट प्रभाव अपेक्षित है, और क्रिश्चियन साइंटिस्ट अपने शरीर का सबसे अच्छा ख्याल रखते हैं जब वह इसे अपने विचार से बाहर छोड़ देता है, और, प्रेरित पॉल की तरह, "शरीर से अनुपस्थित रहने के लिए और प्रभु के साथ उपस्थित होने के लिए तैयार है।"

16. 283 : 4-12

मन सभी आंदोलन का स्रोत है, और इसकी स्थायी और सामंजस्यपूर्ण कार्रवाई की मंदता या जांच करने के लिए कोई जड़ता नहीं है। माइंड "कल, और आज, और हमेशा" जीवन, प्रेम और ज्ञान की तरह ही है। पदार्थ और उसके प्रभाव - पाप, बीमारी और मृत्यु - नश्वर मन की अवस्थाएँ हैं जो कार्य करते हैं, प्रतिक्रिया करते हैं, और फिर एक पड़ाव पर आते हैं। वे मन के तथ्य नहीं हैं। वे विचार नहीं हैं, बल्कि भ्रम हैं। सिद्धांत निरपेक्ष है। यह किसी भी त्रुटि से स्वीकार नहीं किया जाता है, लेकिन समझने पर निश्चित रहता है।

17. 205 : 32-3

जब हम दिव्य के साथ अपने संबंध को पूरी तरह से समझते हैं, तो हमारे पास कोई अन्य मन नहीं हो सकता है, लेकिन उनका - कोई अन्य प्रेम, ज्ञान, या सत्य, जीवन का कोई अन्य अर्थ नहीं है, और पदार्थ या त्रुटि के अस्तित्व की कोई चेतना नहीं है।

18. 467 : 9-16

यह अच्छी तरह समझा जाना चाहिए कि सभी पुरुषों का एक मन, एक ईश्वर और पिता, एक जीवन, सत्य और प्रेम होता है। यह तथ्य स्पष्ट होते ही मानव जाति अनुपात में परिपूर्ण हो जाएगी, युद्ध बंद हो जाएगा और मनुष्य का सच्चा भाईचारा स्थापित हो जाएगा। कोई अन्य देवता नहीं, कोई दूसरा नहीं, बल्कि एक ही मार्गदर्शक का मन, मनुष्य ईश्वर की समानता है, शुद्ध और शाश्वत है, और उसके पास वह मन है जो मसीह में भी था।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वेषी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6